

मांडो मेहँदी | By Kamal Vashishth

म्हारी झुँझन वाली दादी आई सुपनै माही रात
बोली जल्दी आकर मांडो मेहँदी होता ही प्रभात
म्हारे मन ने चाही मांडो मैं तो बोलू मन की बात
बोली जल्दी आकर मांडो मेहँदी होता ही प्रभात

भादी मावस अब तो नज़दीक आ रही
तन धन जी लेने आसी करके सब तयारी
देख राजी हो तन धन जी ऐ सोना बगल्या हाथ
बोली जल्दी आकर मांडो मेहँदी होता ही प्रभात

आओ सुहागन आओ हिलमिल सारी
दादी जी आशीष देसी थाने बारी बारी
थारो अमर सुहाग रहसी वर यो देवे मात
बोली जल्दी आकर मांडो मेहँदी होता ही प्रभात

मेहँदी भी रच के बोली जाने दुनिया सारी
दादी मेरो मान बढ़ायो राहु मैं आभारी
गावे कमल मेहँदी टीटू हो गई ई जग में विख्यात
बोली जल्दी आकर मांडो मेहँदी होता ही प्रभात

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%82%e0%a4%a1%e0%a5%8b-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%b9%e0%a4%81%e0%a4%a6%e0%a5%80-by-kamal-vashishth/>